आह्वान | वीपीकेएएस में संवाद कार्यशाला में विशेषज्ञों ने किसान हितों पर किया चिंतन

फसलों को जानवरों से बचाना चुनौती

संवाद सहयोगी, अल्मोड़ा : पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि से आजीविका बढ़ाने के तमाम अवसर हैं लेकिन जंगली जानवरों के आतंक से इन्हें बचाना काफी चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में फसलों को बचाने के लिए हरसंभव प्रयास किए जाएंगे।

विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में फसलों की जंगली जानवरों से सुरक्षा विषय पर आयोजित संवाद कार्यशाला को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. अरुण पटनायक ने यह बात कही। उन्होंने कहा कि जंगली जानवरों के आतंक से निजात पाना जहां लगातार चुनौतीपूर्ण साबित होता जा रहा है, वहीं बंदर भगाने की बंदूक और बॉयोएकास्टिक प्रणाली का प्रयोग काश्तकारों के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है। जोधपुर से यहां पहुंचे प्रधान वैज्ञानिक डा. आरएस त्रिपाठी ने कहा कि कृषि तकनीकों का समझकर इनका सामूहिक प्रयोग करने से किसानों को अधिक मदद मिलेगी। तेलंगाना कृषि विवि के डॉ. वासुदेव राव ने बताया कि एग्री केनन और बॉयोएकोस्टिक पद्धति का परीक्षण काफी सफल पाया गया है। कार्यक्रम के दौरान मौजूद काश्तकारों को बंदर भगाने वाली बंदूक के प्रयोग के बारे में भी जानकारी दी गई। कार्यक्रम में डा. लक्ष्मी कांत, डा. जेके बिष्ट, राजेंद्र प्रसाद, कुशाग्रा जोशी समेत आसपास के गांवों के लोग थे।

अल्मोड़ा विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में बंदर भगाने की बंदूक (एग्री केनन) के बारे में किसानों को जानकारी देते (दाएं से) डॉ. वासुदेव रॉय प्रधान वैज्ञानिक हैदराबाद, डॉ. ए पटनायक निदेशक वीपीकेएएस, डॉ. जेके बिष्ट प्रभागाध्यक्ष फसल उत्पादन ● जागरण

अल्मोड़ा विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में संवाद में किसान ● जागरण